सामाजिक विज्ञान

(अर्थशास्त्र)

अध्याय-1: पालमपुर गाँव की कहानी

पालमपुर गाँव का परिचय

- पालमपुर में कृषि ही प्रमुख उत्पादन प्रक्रिया है। गाँव में 450 परिवार रहते है। 150 परिवारों के पास, खेती के लिए भूमि नहीं है। बाकी 240 परिवारों के पास 2 हेक्टेयर से कम क्षेत्रफल वाले छोटे भूमि के टुकड़े हैं।
- गांव की कुल जनसंख्या का एक तिहाई भाग दलित या अनुसूचित जातियों का है। इनके घर गांव के एक कोने में छोटे घर होते हैं। जो कि मिट्टी और फूस से होते हैं।
- गाँव में ज़्यादातर भूमि के स्वामी उच्च जाति के 80 परिवार है। उच्च जाति के मकान ईट और सीमेंट के बने हुए हैं।
- पालम पुर गांव में शिक्षा के लिए–एक हाई स्कूल दो प्राथमिक विद्यालय , एक स्वास्थ्य केन्द्र और एक निजी अस्पताल भी है।

मुख्य उत्पादन गतिविधियाँ

- गांव के कुल कृषि क्षेत्र के केवल 40 प्रतिशत भाग में सिंचाई होती है। अधिक उपज पैदा करने वाले बीज (HYV) की सहायता से गेहूँ की उपज 1300 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 3200 किलोग्राम हो गई है।
- पालम पुर गांव में 25 प्रतिशत लोग गैर कृषि कार्यों में लगे हुए हैं जैसे डेयरी दुकानदारी, लघुस्तरीय निर्माण, उद्योग, परिवहन इत्यादि।

गैर कृषि क्रियाएँ :-

अन्य उत्पादन गतिविधियों में जिन्हें गैर कृषि क्रियाएँ कहा गया है ‘ लघु विनिर्माण, परिवहन, दुकानदारी आदि शामिल हैं।

उत्पादन :-

उत्पादन का उद्देश्य या प्रयोजन ऐसी वस्तुएँ और सेवाएँ उत्पादन करना है जिनकी हमें आवश्यकता है। उत्पादन (Production) Output (तैयार माल) में Input (कच्चे माल) को बदलने (परिवर्तित

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

करने) की एक प्रक्रिया है। तो, उत्पादन का अर्थ है माल और सेवाओं का निर्माण। यह मानव की इच्छाओं को पूरा करने के लिए किया जाता है। इस प्रकार, उत्पादन परिवर्तन की एक प्रक्रिया है।

उत्पादन हेतु आवश्यक चीजे :-

वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन के लिए चार चीजें आवश्यक है :-

- **भूमि तथा अन्य प्राकृतिक संसाधन :-** जल, वन, खनिज।
- **श्रम :-** काम करने वाले लोग।
- **भौतिक पूंजी :-**
- **स्थायी पूंजी :-** औजार, मशीन, भवन।
- **कार्यशील पूंजी :-** कच्चा माल, नकद पूंजी।
- ज्ञान एवं उद्यम मानव पूंजी।
- पहली आवश्यकता है भूमि तथा अन्य प्राकृतिक संसाधन जैसे-जल, वन खनिज की भी आवश्यकता है।
- दूसरी आवश्यकता है श्रम अर्थात् जो लोग काम करेगें। कुछ उत्पादन क्रियाओं में शिक्षित कर्मियों की भी आवश्यकता है।
- **तीसरी आवश्यकता भौतिक पूंजी :-** उत्पादन के समय प्रत्येक स्तर पर काम आने वाली आगतें जैसे इमारतें, मशीनें औजार आदि। इसमें स्थायी और कार्यशील पूंजी दोनों शामिल हैं।
- **औज़ार, मशीन, भवन :-** औज़ारों तथा मशीनों में अत्यंत साधारण औज़ार जैसे किसान का हल से लेकर परिष्कृत मशीनें जैसे–जेनरेटर, टरबाइन, कंप्यूटर आदि आते हैं। औज़ारों, मशीनों और भवनों का उत्पादन में कई वर्षों तक प्रयोग होता है और इन्हें स्थायी पूँजी कहा जाता है।
- **कच्चा माल और नकद मुद्रा :-** उत्पादन में कई प्रकार के कच्चे माल की आवश्यकता होती है, जैसे बुनकर द्वारा प्रयोग किया जाने वाला सूत और कुम्हारों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली मिट्टी। उत्पादन के दौरान भुगतान करने तथा ज़रूरी माल खरीदने के लिए कुछ पैसों की भी आवश्यकता होती है। कच्चा माल तथा नकद पैसों को कार्यशील पूँजी कहते हैं।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

- **एक चौथी आवश्यकता भी होती है मानव पूंजी :-** उत्पदन करने के लिये–भूमि श्रम और भौतिक पूंजी को एक साथ करने योग्य बनाने के लिए ज्ञान और उद्यम की आवश्यकता है जिसे मानव पूंजी कहा जाता है।
- **बाजार :-** उत्पादित वस्तुओं के अन्तिम उपभोग हेतु प्रतिस्पर्धा के लिये बाजार भी एक आवश्यकत तत्व है।

उत्पादन के कारक

भूमि: यह किसी भी व्यावसायिक भूमि के लिए शीर्ष स्थान प्राप्त करता है जब यह महत्वपूर्ण होता है फ़ैक्टर का उत्पादन। भूमि का एक व्यापक वर्गीकरण है क्योंकि यह विभिन्न भूमिकाओं को निबंधित कर सकता है। किसी विशेष भूमि पर उपलब्ध कृषि से लेकर वाणिज्यिक संसाधनों तक सब कुछ वास्तव में उच्च के लिए जिम्मेदार है आर्थिक मूल्य हालांकि, आज समय काफी बदल गया है, और एक महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में संपत्ति का उपयोग करने का महत्व काफी हद तक कम हो गया है। प्रौद्योगिकी क्षेत्र इस श्रेणी के अंतर्गत आता है क्योंकि इसका भूमि के एक टुकड़े पर कम प्रभाव पड़ता है, लेकिन अन्य क्षेत्रों के लिए ऐसा नहीं कहा जा सकता है।

पूंजी या धन: पूंजी या धन आर्थिक दृष्टिकोण से अलग करते समय, पूंजी की तुलना आमतौर पर पैसे से की जाती है। लेकिन एकमात्र इकाई के रूप में धन को वास्तव में उत्पादन का प्राथमिक कारक नहीं माना जा सकता है। पैसा विभिन्न उत्पादन प्रक्रियाओं को चैनलाइज़ करने में मदद करता है, जो बदले में आपको अपना व्यावसायिक साम्राज्य बनाने में मदद कर सकता है। उत्पादन के कारक में दो मुख्य प्रकार की पूंजी शामिल होती है। निजी पूंजी में वे सभी चीजें या सामान शामिल हैं जो किसी के लाभ के लिए खरीदे गए हैं, जबकि सार्वजनिक पूंजी वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए किया गया निवेश है।

उद्यमिता: उद्यमिता संपूर्ण रूप से उद्यमिता को उत्पादन के एक अन्य कारक के रूप में देखा जा सकता है। लेकिन जब हम शब्द के गहरे अर्थ में उतरते हैं, तो कोई आसानी से कह सकता है कि उद्यमिता वह है जो उत्पादन के सभी कारकों को एक साथ जोड़ती है।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

श्रम: श्रम अंतिम लेकिन कम से कम, सूची में प्रवेश करने वाला लेबर है। उत्पादन श्रम के कारक के रूप में किसी व्यक्ति द्वारा अपनी कंपनी या उत्पाद को सुर्खियों में लाने के लिए दिया गया मानवीय प्रयास है। श्रमिक विभिन्न संदर्भों में समग्र रूप से भिन्न हो सकते हैं; वे आपके अधीन काम करने वाले कर्मचारियों के कौशल का उल्लेख करते हैं।

जमीन मापने की ईकाई :-

1 हेक्टेयर 10,000 वर्ग मी

पालमपुर गाँव में कृषि

- पालमपुर के लोगों का मुख्य पेशा कृषि उत्पादन है। यहां काम करने वाले लोगों में 75 प्रतिशत लोग अपने जीवनयापन के लिए खेती पर निर्भर है।
- कृषि ऋतु को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा गया है।
- **वर्षा ऋतु (खरीफ़) :-**

  अवधि :- जुलाई–अक्टूबर।

  फसल :- ज्वार, बाजरा, चावल, कपास, गन्ना तम्बाकु आदि।

- **शरद् ऋतु (रबी) :-**

  अवधि :- अक्टूबर–मार्च।

  फसल :- गेहुँ, सरसों, दालें, आलु आदि।

- **ग्रीष्म ऋतु (जायद) :-**
- **अवधि :-** मार्च–जून
- **फसल :-** तरबूज , खीरा , फलियाँ सब्जियाँ फूल इत्यादि।
- बिजली के विस्तार ने सिंचाई व्यवस्था में सुधार हुआ परिणाम स्वरूप किसान दोनों खरीफ़ (Kharif) और रबी (Rubi) दोनों ऋतुओं की फसल उगाने में सफल हो सके हैं।

बहुविध फसल प्रणाली

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

बहुविध फसल प्रणाली में, एक किसान एक ही कैलेंडर वर्ष में खेत पर दो या दो से अधिक फसलें उगाते हैं। एक फसल के विपरीत, जिसमें एक खेत में केवल एक फसल लगाना भी शामिल है। इसमें अंतर-फसल, मिश्रित-फसल और रिले फसल शामिल हैं।

एक ही भूमि के टुकड़े से उत्पादन बढ़ाने का तरीका (एक साल में किसी उत्पन्न करना)। पालमपुर के किसान कम से कम दो मुख्य फसल उगाते है , तीसरी फसल के रूप में आलू पैदा कर रहे हैं।

खेती करने के तरीके

परम्परागत कृषि :-

- कृषि में पारम्परिक बीजों का प्रयोग।
- कम सिचांई की आवश्यकता।
- उर्वरको के रूप में गाय के गोबर अथवा दूसरी प्राकृतिक खाद का प्रयोग।
- पारम्परिक हल का प्रयोग।
- कुओं नदी, रहट, तालाब से सिंचाई।

आधुनिक कृषि :-

- कृषि में अधिक उपज देने वाले HYV का प्रयोग।
- अधिक सिंचाई की आवश्यकता।
- रासायनिक खाद और कीटनाशकों का प्रयोग।
- मशीनों का प्रयोग।
- नलकूपों और पम्पिंग सेट के द्वारा सिंचाई।

Fukey Education

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

हरित क्रान्ति :-

हरित क्रांति (harit kranti) दो शब्दों के योग से बना एक योगिक शब्द है जिसका पहला शब्द है 'हरित' दूसरा शब्द है 'क्रांति' ।

इसमें हरित का अर्थ हरे रंग से है जो कि किसी को इंगित करता है, जबकि क्रांति शब्द से दो बातें स्पष्ट होती है -

किन्हीं तथ्यों में इतना तीव्र परिवर्तन जिसे चिन्हित किया जा सके ।

इस परिवर्तन का प्रभाव पर्याप्त लंबे समय तक महसूस किया जा सके क्योंकि इससे कुछ मूलभूत परिवर्तन होते हैं ।

इस प्रकार, हरित क्रांति का शाब्दिक अर्थ है - कृषि क्षेत्र में होने वाला तीव्र परिवर्तन, ए कैसा परिवर्तन जिससे मैं केवल उत्पादन में वृद्धि हुई वरन् फसलों की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ हो ।

हरित क्रान्ति द्वारा भारतीय कृषकों ने अधिक उपाज वाले बीजो (HYV) के द्वारा गेहुँ और चावल की खेती करना सीखा।

हरित क्रान्ति से भारतीय कृषि पर पड़े प्रभाव

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

- हरित क्रान्ति ने भारतीय कृषकों को ज्यादा उपज वाले बीज HYV के द्वारा चावल और गेहूँ की कृषि करने के तरीके सिखाये।
- परम्परागत बीजों की तुलना में HYV अधिक उपज वाले बीज सिद्ध हुए।
- किसानों ने कृषि में ट्रेक्टर और फसल काटने की मशीनों का उपयोग करना प्रारम्भ कर दिया।
- रसायनिक खादों का प्रयोग करना शुरू किया।
- प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया गया।

हरित क्रान्ति से मृदा को नुकसान

- रासायनिक उर्वरकों के कारण मृदा की उर्वरता नष्ट होने लगी।
- भू–जल के अति प्रयोग से भौमजल स्तर (भूमि जलस्तर) गिरने लगा।
- रासायनिक उर्वर्क आसानी से पानी में घुलकर मिट्टी से नीचे चले जाते हैं और जल को दुषित करते हैं।
- ये बैक्टीरिया और सूक्ष्य जीवाणु नष्ट कर देते हैं जो मिट्टी के लिए उपयोगी हैं उर्वरकों के अति प्रयोग से भूमि खेती के योग्य नहीं रहती।
- अनेक क्षेत्रों में हरित क्रान्ति के कारण उर्वरकों के अधिक प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता कम हो गई।
- इसके अतिरिक्त नलकूपों से सिंचाई के कारण भौम जल स्वर कम हो गया और प्रदुषण की बढ़ गया।

Fukey Education

पालमपुर में भूमि का वितरण

- पालमपुर में 450 परिवारों में से लगभग एक तिहाई अर्थात् 150 परिवारों के पास खेती के लिये भूमि नहीं हैं जो अधिकाशत: दलित है।
- 240 परिवारों जिनके पास भूमि नहीं है 2 हेक्टेयर से भी कम क्षेत्रफल वाले टुकड़ों पर खेती करते हैं।
- 8 के ऐसे टुकड़ों पर खेती करने से किसानों के परिवार को पर्याप्त आमदनी नहीं होती।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

- पालमपुर में मझोले किसान और बड़े किसानों के 60 परिवार हैं जो 2 हेक्टेयर से अधिक भूमि पर खेती करते है।

Fukey Education

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 14)

प्रश्न 1 भारत की जनगणना के दौरान दस वर्ष में एक बार प्रत्येक गाँव का सर्वेक्षण किया जाता है। पालमपुर से संबंधित सूचनाओं के आधर पर निम्न तालिका को भरिए-

1. अवस्थिति क्षेत्र।
2. गाँव का कुल क्षेत्र।
3. भूमि का उपयोग (हेक्टेयर में)

कृषि भूमि		भूमि जो कृषि क लिए उपलब्ध नहीं है, (निवास स्थानों, तालाबों, चरागाहों आदि के क्षेत्र)
सिंचित	असिंचित	26 हेक्टेयर
________	________	

4. सुविधाएँ

1	शैक्षिक	________
2	चिकित्सा	________
3	बाज़ार	________
4	बिजली पूर्ति	________
5	संचार	________
6	निकटतम कस्बा	________

उत्तर –

1. **अवस्थिति क्षेत्र:** पडोसी गाँवों व कस्बों से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। निकटतम छोटा कस्बा साहपुर एवं निकटतम बड़ा गाँव रायगंज है।
2. **गाँव का कुल क्षेत्र:** गाँव का कुल क्षेत्र- 200 + 50 + 26 = 276 हैक्टेयर।
3. **भूमि का उपयोग (हेक्टेयर में):**

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

कृषि भूमि		भूमि जो कृषि क लिए उपलब्ध नहीं है, (निवास स्थानों, तालाबों, चरागाहों आदि के क्षेत्र)
सिंचित	असिंचित	
200 हेक्टेयर	50 हेक्टेयर	26 हेक्टेयर

4. सुविधाएँ:

1	शैक्षिक	एकउच्चविघालय, दो प्राथमिक पाठशालाए।
2	चिकित्सा	चिकित्साएकसरकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और एक निजी दवाखाना।
3	बाज़ार	एक सुविकसित बाजार।
4	बिजली पूर्ति	पालमपुर के अधिकतर घरों में बिजली के कनेक्शन लगे हए हैं।
5	संचार	सड़कों एवं परिवहन की सुविकसित प्रणाली।
6	निकटतम कस्बा	साहपुर।

प्रश्न 2 पालमपुर में बिजली के प्रसार ने किसानों की किस तरह मदद की?

उत्तर - बिजली से खेतों में स्थित सभी नलकूपों एवं विभिन्न प्रकार के छोटे उद्योगों को विद्युत ऊर्जा मिलती है। पालमपुर के किसानों की बिजली के प्रसार ने विभिन्न तरीकों से सहायता की है।

1. इसने पालमपुर के किसानों को अपने खेतों की सिंचाई बेहतर तरीके से करने में सहायता की है। इससे पहले वे रहट के द्वारा सिंचाई करते आए थे जो अधिक प्रभावशाली तरीका नहीं था। किन्तु अब बिजली की सहायता से वे अधिक बड़े क्षेत्र को कम समय में अधिक प्रभावशाली तरीके से सींच सकते थे।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

2. बिजली से सिंचाई प्रणाली में सुधार के कारण किसान पूरे वर्ष के दौरान विभिन्न फसलें उगा सकते थे।
3. उन्हें मानसून की बरसात पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है जो कि अनिश्चित एवं भ्रमणशील।
4. बिजली के प्रयोग के कारण पालमपुर के किसानों को बहुत से हाथ के कामों एवं चिंताओं से मुक्ति मिल गई।

प्रश्न 3 खेती की आधुनिक विधियों के लिए ऐसे अधिक आगतों की आवश्यकता होती है, जिन्हें उद्योगों में विनिर्मित किया जाता है, क्या आप सहमत हैं?

उत्तर - हाँ, हम सहमत हैं। क्योंकि आधुनिक कृषि तकनीकों को अधिक साधनों की जरूरत है जो उद्योगों में बनाए जाते हैं। एचवाईवी बीजों को अधिक पानी चाहिए और इसके साथ ही बेहतर नतीजों के लिए रासायनिक खाद, कीटनाशक भी चाहिए। किसान सिंचाई के लिए नलकूप लगाते हैं। ट्रैक्टर एवं प्रैसर जैसी मशीनें भी प्रयोग की जाती हैं। एचवाईवी बीजों की सहायता से गेहूं की पैदावार 1300 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 3200 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक हो गई और अब किसानों के पास बाजार में बेचने के लिए अधिक मात्रा में फालतू गेहूं है।

प्रश्न 4 क्या सिंचित क्षेत्र को बढ़ाना महत्वपूर्ण है? क्यों?

उत्तर - हाँ, सिंचित क्षेत्र को बढ़ाना महत्वपूर्ण है क्योंकि-

1. कई क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा नहीं होती, यह अनिश्चित होती है। पठारी क्षेत्र जैसे दक्षिणी पठार और मध्यभारत, पंजाब, राजस्थान आदि ऐसे क्षेत्र है जहाँ कम वर्षा होती है। इन क्षेत्रों में सिंचाई बहुत आवश्यक है इसके बिना यहां खेती प्राय असंभव है।
2. कई क्षेत्र ऐसी भी है जहां पर्याप्त वर्षा तो होती है पर यह वर्ष के कुछ दिनों तक ही केंद्रित होती है। वर्ष का बाकि भाग सूखा ही रहता है। अतः इन क्षेत्रों में सिंचाई वर्ष में एक से अधिक फैसले उगने में लाभदायक होंगी।
3. इसके अतिरिक्त धान, गेहूं,गन्ना जैसे कुछ खाद्य और नगदी फसलों के लिए जल की पर्याप्त एवं निरंतर आपूर्ति की आवश्यकता होती है।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

4. इसके साथ ही अधिक उपज देने वाली एच.वाई.वी बीजों के लिए भी अधिक जल की जरूरत होती है।
5. तेजी से बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकता को देखते हुए कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए सिंचाई एक अत्यंत महत्वपूर्ण है।
6. सिंचाई से उर्वकता को तो बढ़ाया ही जा सकता है साथ ही इससे खतरनाक कीटनाशो से भी बचा जा सकता है।

प्रश्न 5 पालमपुर में 450 परिवारों में भूमि के वितरण की एक सारणी बनाइए।

उत्तर - पालमपुर के 450 परिवारों में भूमि का वितरण

क्रमांक	**किसानों के प्रकार**	**परिवारों की संख्या**	**अधिकृत भूमि**
1	भूमिहीन किसान	150(अधिकांश दलित)	भूमिहीन
2	छोटे किसान	240	2 हेक्टेयर से कम
3	मझोलेऔरबड़े किसान	60	2 हेक्टेयर से अधिक
4	बड़े किसान	450 परिवार	10 हेक्टेयर या उससे अधिक
5	कुल	450 परिवार	————

प्रश्न 6 पालमपुर में खेतिहर श्रमिकों की मजदूरी न्यूनतम मजदूरी से कम क्यों है?

उत्तर - पालमपुर में खेतिहर श्रमिकों की मजदूरी न्यूनतम मजदूरी से कम है। यह डाला की स्थिति से स्पष्ट हो जाता है। सरकार ने खेतिहर श्रमिकों के लिए एक दिन की मजदूरी 60 रुपये निर्धारित की है। लेकिन डाला को सिर्फ 35-40 रुपये ही मिलते हैं। इसके कारण इस प्रकार है।

1. खेतिहर मजदूर गरीब और असहाय परिवारों से आते है। वे दैनिक मजदूरी पर काम करते हैं उन्हें नियमित रुप से काम ढूंढना पड़ता है। पालमपुर में खतिहर श्रमिक बहुत ज्यादा है और उनकी मांग काम है इस कारण उनके बीच पर्तिस्पर्धा ज्यादा है। जिससे पालमपुर में खेतिहर श्रमिक न्यूनतम मजदूरी से कम मजदूरी पर भी काम करने को तैयार हो जाते है।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

2. अधिकांश खेतिहर श्रमिक निचली जाति और दलित वर्गों से होते हैं और उनमें भूमि मालिकों से ऊँची मजदूरी मांगने की हिम्मत नहीं होती है।
3. खेतिहर श्रमिक समान्यतः अशिक्षित होते हैं। अतः वे ऊँची मजदूरी सुनिश्चित करने के लिए भूमि मालिकों से मोल-भाव नहीं कर पाते।

प्रश्न 7 अपने क्षेत्र में दो श्रमिकों से बात कीजिए। खेतों में काम करने वाले या विनिर्माण कार्य में लगे मज़दूरों में से किसी को चुनें। उन्हें कितनी मज़दूरी मिलती है? क्या उन्हें नकद पैसा मिलता है। या वस्तु-रुप में? क्या उन्हें नियमित रुप से काम मिलता है? क्या वे कर्ज़ में हैं?

उत्तर - हमारे क्षेत्र में रामदयाल और लक्ष्मी दो खेतिहर मजदूर हैं जो एक निर्माण स्थल पर काम करते हैं। उन्हें मजदूरी के रूप में 70-80 रुपए मिलते हैं। हाँ, उन्हें मजदूरी नकद मिलती है। उनमें से अधिकतर को नियमित रूप से काम नहीं मिलता क्योंकि बहुत से लोग कम दरों पर काम करने के लिए राजी हो जाते हैं। क्योंकि उन्हें कम मजदूरी मिलती है इसलिए वे कर्ज में डूबे हुए हैं। कम मजदूरी के कारण वे बड़ी कठिनाई से परिवार का भरण-पोषण कर पाते हैं।

प्रश्न 8 एक ही भूमि पर उत्पादन बढ़ाने के अलग-अलग कौन से तरीके हैं? समझाने के लिए उदाहरणों का प्रयोग कीजिए।

उत्तर - भूमि के एक ही टुकड़े पर उत्पादन में वृद्धि हेतु निम्नलिखित तरीकों को अपनाया जाता है-

1. **बहुविधि फसल उगाना-** भूमि के एक ही टुकड़े पर एक वर्ष में कई फसलों को उगाना बहुविध फसल प्रणाली कहलाता है। पालमपुर के सभी किसान वर्ष में कम-से-कम दो फसलें उगाते हैं। पिछले 15-20 वर्ष से अनेक किसान तीसरी फसल के रूप में आलू की खेती कर रहे हैं।
2. **आधुनिक कृषि उपकरणों एवं तकनीक का उपयोग-** पंजाब, हरियाणा एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसान आधुनिक कृषि तरीकों को अपनाने वाले भारत के पहले किसान थे। इन क्षेत्रों के किसानों ने सिंचाई के लिए नलकूपों, एच.वाई.वी. बीज, रासायनिक खादों एवं कीटनाशकों का प्रयोग किया। ट्रैक्टर एवं प्रैशर का भी प्रयोग किया गया। जिससे जुताई एवं फसल की कटाई आसान हो गई। उन्हें अपने प्रयासों में सफलता मिली और उन्हें गेहूं की अधिक पैदावार के रूप में इसका प्रतिफल मिला। एचवाईवी बीजों की सहायता से पैदावार

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

1300 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 3200 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक हो गई और अब किसानों के पास बहुत सा अधिशेष गेहूँ बाजार में बेचने के लिए होता है।

प्रश्न 9 एक हेक्टेयर भूमि के मालिक किसान के कार्य का ब्यौरा दीजिए।

उत्तर - भूमि को मापने की मानक इकाई हेक्टेयर है। एक हेक्टेयर 100 मीटर की भुजा वाले वर्गाकार भूमि के टुकड़े के क्षेत्रफल के बराबर होता है। एक किसान जो एक हेक्टेयर भूमि पर काम करता है उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। एक छोटा किसान जानता है कि वह इतने छोटे खेत पर काम करके अपने दोनों समय के खाने का प्रबंध नहीं कर सकता। इसलिए उसे अपने खेत पर काम करने के बाद 35-40 रूपए प्रतिदिन के हिसाब से किसी बड़े किसान के खेतों में काम करना पड़ता है। यदि वह अपने ही खेत पर खेती शुरू करता है तो न उसके पास इसके लिए जरूरी साधन हैं, न बीज, खाद व कीटनाशक खरीदने के पैसे। एक बहुत छोटा किसान होने के कारण उसके पास कोई उपस्कर एवं कार्यशील पूँजी नहीं है। इन सब चीजों का प्रबंध करने के लिए उसे या तो किसी बड़े किसान से या फिर किसी व्यापारी अथवा साहूकार से ऊँची ब्याज दरों पर धन उधार लेना पड़ता था। इतनी मेहनत करने के बाद भी इस बात की संभावना रहती थी कि वो कर्ज में डूब जाए जो कि सदैव उसके लिए बहुत बड़ी चिंता का कारण रहता था।

प्रश्न 10 मझोले और बड़े किसान कृषि से कैसे पूँजी प्राप्त करते हैं? वे छोटे किसानों से कैसे भिन्न हैं?

उत्तर - मझोले और बड़े किसानों के पास अधिक भूमि होती है अर्थात् उनकी जोतों का आकार बड़ा होता है जिससे वे अधिक उत्पादन करते हैं।

1. अधिक उत्पादन होने से वे इसे बाजार में बेचकर धनलाभ प्राप्त करते हैं। इस धन का प्रयोग वे उत्पादन की आधुनिक विधियों को अपनाने में करते हैं।
2. इनकी पूँजी छोटे किसानों से भिन्न होती है क्योंकि छोटे किसानों के पास भूमि कम होने के कारण उत्पादन उनके पालन-पोषण के लिए भी कम बैठता है।
3. उन्हें आधिक्य प्राप्त न होने के कारण बचते नहीं होती हैं इसलिए खेती के लिए उन्हें पूँजी बड़े किसानों या साहूकारों से उधार लेकर पूरी करनी पड़ती है जिस पर उन्हें काफी ब्याज चुकाना पड़ता है जो उन्हें ऋणग्रस्तता के चंगुल में फँसा देता है।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 15)

प्रश्न 11 सविता को किन भात पर तेजपाल सिंह से ऋण मिला है? क्या ब्याज़ की कम दर पर बैंक से कर्ज़ मिलने पर सविता की स्थिति अलग होती?

उत्तर - तेजपाल सिंह ने सविता को 24 प्रतिशत की ब्याज दर पर 4 महीने के लिए पैसा देना स्वीकार किया। जो कि बहुत अधिक ब्याज दर है। सविता एक कृषि मजदूर के रूप में कटाई के समय 35 रुपए प्रतिदिन की दर पर उसके खेतों में काम करने को भी सहमत होती है। तेजपाल सिंह द्वारा सविता से लिया जाने वाला ब्याज बैंक की अपेक्षा बहुत अधिक था। यदि सविता इसकी अपेक्षा बैंक से उचित ब्याज दर पर ऋण ले पाती तो उसकी हालत निश्चय ही इससे अच्छी होती।

प्रश्न 12 अपने क्षेत्र के कुछ पुराने निवासियों से बात कीजिए और पिछले 30 वर्षों में सिंचाई और उत्पाद के तरीकों में हुए परिवर्तनों पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट लिखिए (वैकल्पिक)।

उत्तर - पुराने निवासियों से बात करने पर पिछले 30 सालों में सिंचाई और उत्पादन के तरीकों में हुए परिवर्तन से मुझे पता चला कि 30 वर्ष पहले खेती के पुराने तरीके प्रयोग किए जाते थे। किसान अपने खेतों को बैलों की सहायता से जोतते थे। सिंचाई की बहुत अधिक सुविधाएं नहीं थी। वे मॉनसून की बरसातों पर निर्भर रहते थे जो कि बहुत अनियमित होती थी। रहट को उस समय कुओं से पानी निकालने के लिए प्रयोग किया जाता था। किन्तु तकनीक में प्रगति के साथ किसानों ने सिंचाई के लिए नलकूप लगवा लिए हैं और एच.वाई.वी. बीजों, रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों की सहायता से खेती करने लगे हैं। यहाँ तक कि खेतों में ट्रैक्टर एवं मशीनों का प्रयोग किया जाता है जिसने जुताई एवं फसल कटाई को तेज कर दिया है।

Fukey Education

प्रश्न 13 आपके क्षेत्र में कौन-से गैर-कृषि उत्पादन कार्य हो रहे हैं? इसकी एक संक्षिप्त सूची बनाइए।

उत्तर - हमारे क्षेत्र में निम्नलिखित गैर-कृषि उत्पादन कार्य हो रहे है-

1. **डेयरी-** लोग गायों और भैसों को पालते है और उनका दूध बेचते है।
2. **लघु स्तरीय विनिर्माण-** विनिर्माण कार्य पारिवारिक श्रम की सहयता से अधिकतर घरों या खेतों में किया जाता है इसमें गुड़ बनाने,मिट्टि के बर्तन आदि का काम शामिल है।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

3. **दुकानदारी-** हमारे क्षेत्र के कुछ लोग दुकानदारी का काम करते है। वे थोक बाजारों से सामान लेकर उन्हें गावँ में लाकर दुकानों पर बेचते है।
4. **परिवहन-** हमारे क्षेत्र में कुछ लोग परिवहन सेवाओं में भी लगे है। इनमे रिक्शेवाला, ट्रक ड्राइवर, ट्रेक्टर, जीप और दूसरी गाड़िया चलने वाले शामिल है।

प्रश्न 14 गाँवों में और अधिक गैर-कृषि कार्य प्रारंभ करने के लिए क्या किया जा सकता है?

उत्तर – हमारे गाँव में लगभग 75 प्रतिशत लोग कृषि पर निर्भर हैं जिनमें किसान और खेतीहर मजदूर दोनों शामिल हैं। किन्तु उनकी आर्थिक दशा शोचनीय है। उनकी जनसंख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है जबकि भूमि स्थिर है। और कृषि क्रियाओं में और अधिक मजदूरों को काम मिल पाने की संभावना बहुत कम है। इसलिए गैर-कृषि कार्यों में वृद्धि करना बहुत जरूरी हो गया है ताकि कुछ खेतीहर मजदूरों को उनमें काम मिल सके, जैसे कि डेयरी, विनिर्माण, दुकानदारी, परिवहन, मुर्गी पालन, दर्जी, शैक्षिक कार्य आदि गैर-कृषि क्रियाएं। यहाँ तक कि किसान भी इस प्रकार के कामों में शामिल हो सकते हैं जब उनके पास खेतों में कुछ अधिक काम नहीं होता हो और वे बेरोजगार हों। यह उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार करने में सहायक सिद्ध होगा।

Future's Key
Fukey Education

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com